डॉ० संगीता राय
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

"प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते" अर्थात् मन्दबुद्धि व्यक्ति भी निष्प्रयोजन किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता। मनुष्य जो भी कार्य करता है, उसमें उसका कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है।

काव्य प्रयोजन का अर्थ है काव्य का उद्देश्य अथवा रचना की आंतरिक प्रेरणा शक्ति। भारतीय आचार्यों ने काव्य को सोद्देश्य माना है अतः भरत मुनि से विश्वनाथ तक काव्य के प्रयोजन पर विचार करने की लम्बी परम्परा रही है। विश्वनाथ से पूर्व कवियों द्वारा रचित काव्य प्रयोजन इस प्रकार है।

आचार्य भरत ने नाटक को काव्य का प्रयोजन मानते हुए कहा है कि

"धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम्।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति॥

भामह ने काव्य के प्रयोजन का वर्णन निम्न प्रकार से किया है:—

"धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्॥

अर्थात् उत्तम काव्य की रचना धर्म, अर्थ काम और मोक्ष-रूप चारों पुरुषार्थों तथा समस्त कलाओं में निपुणता और कीर्ति एवं प्रीति अर्थात् आनन्द को उत्पन्न करनेवाली होती है।

वामन ने काव्य के दो प्रयोजन माने हैं - एक कीर्ति तथा दूसरा प्रीति +

" काव्यं सद् दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्ति हेतुत्वात् ।

आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में काव्य के छः प्रयोजन माने हैं — यश, ~~अ~~ अर्थ, व्यवहारज्ञान, शिवेतरक्षति (अमंगल का नाश), सद्यः परिनिर्वृति (परमानन्द), कान्तासम्मित उपदेश ।

" काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥"

आचार्य विश्वनाथ ने काव्य के प्रयोजन का प्रतिपादन करते हुए कहा है कि -

" चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते ॥

विश्वनाथ ने न केवल वेदशास्त्रादि दुर्बोध ग्रंथों के अध्ययन में असमर्थ मन्दबुद्धि लोगों को काव्य से चतुर्वर्ग प्राप्ति का सन्देश दिया है अपितु वेदादि शास्त्रों को समझने में समर्थ परिणत बुद्धि वाले लोगों को भी वेदादि की अपेक्षा काव्य से चतुर्वर्ग प्राप्ति की सलाह दी है ।

आचार्य विश्वनाथ ने ~~यह~~ अपने काव्य-प्रयोजन द्वारा यह प्रतिपादित किया है कि काव्य से धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है ।

1) धर्म प्राप्ति :- वेदादि स्त्रोत कृत्य कर्मों जैसे सत्य, दया, अहिंसा आदि का पालन तथा अकृत्य कर्मों जैसे कपट, अनादर छल तथा स्वार्थ आदि का परित्याग करना ही धर्म है । वेद, पुराण, शास्त्रों से धर्म का ज्ञान होता है । विश्वनाथ ने कहा है कि काव्य से उपदेश मिलता है कि

राम के समान कृत्य कर्मों को करना चाहिए तथा रावण के समान अकृत्य कर्मों का परित्याग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त विश्वनाथ ने यह भी कहा है कि अगर एक शब्द का सम्यक प्रयोग भी काव्य से किया जाए तो वह इहलोक एवं स्वर्ग में कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है।

(ii) अर्थ प्राप्ति :- अर्थ की प्राप्ति काव्य से प्रत्यक्ष सिद्ध है। प्राचीन काल में श्रेष्ठ काव्यों की रचना पर कवियों को राजाओं से पुरस्कार मिलते थे। आधुनिक काल में भी काव्य से अर्थ की प्राप्ति होती है। जैसे :- धावक कवि ने हर्षचरित से धन प्राप्त किया था।

(iii) काम प्राप्ति :- जब काव्य से अर्थ (धन) की प्राप्ति होती है तो उसका उपयोग कामनाओं की प्राप्ति में किया जा सकता है।

(iv) मोक्ष प्राप्ति :- जब धर्म, अर्थ, काम की सम्यक रूप से प्राप्ति हो जाती है तो इन प्रति अनासक्ति के भाव भी कालान्तर में उत्पन्न होते हैं। वैसी अवस्था मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति की ओर उन्मुख करते हैं। मोक्षप्राप्ति के लिए उपयोगी उपनिषद आदि ग्रंथों के अध्ययन से कल्याण तथा योग्यता प्राप्त करने के कारण काव्य मोक्ष प्राप्ति का साधन बन जाता है। अतः मोक्ष प्राप्ति में काव्य उपयोगी है।

इस प्रकार विश्वनाथ ने चतुर्वर्ग प्राप्ति को काव्य का मुख्य प्रयोजन माना है।